अथवा

'आपका बंटी' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इस कथन की विस्तृत विवेचना कीजिए।

5. 'सुनीता' उपन्यास के आधार पर सुनीता का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'दिव्या' उपन्यास में इतिहास और कल्पना का अद्भुत समन्वय हुआ है।' स्पष्ट कीजिए।

24/5/17 (Morning)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9207 **GC**

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : Hindi Paper-X (Hindi Upanyas)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi (CBCS)**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए : (7.5×2=15)

(क) कुछ देर के बाद सड़क पर सन्नाटा था, सावन की निद्रा-सी काली रात संसार को अपने अंचल में सुला रही थी और मोटर अनन्त में स्वप्न की भाँति उड़ी चली जाती थी। केवल देह में ठण्डी हवा लगने से गति का ज्ञान होता था। इस अन्धकार में सुखदा के अन्तस्तल में एक प्रकाश-सा उदय हुआ। कुछ वैसा ही प्रकाश, जो हमारे जीवन की अन्तिम घड़ियों में उदय होता है, जिसमें मन की सारी कालिमाएँ, सारी ग्रन्थियाँ, सारी विषमताएँ अपने यथार्थ रूप में नज़र आने लगती हैं।

अथवा

और सचमुच इससे इनके जीवन में भराव भी आता लगा। उन्हें परस्पर हँसना-बोलना अब कठिन नहीं होता है। मिलकर परामर्श करते हैं, योजनाएँ बनाते हैं। दुनिया में बाहर आकर एक को दूसरे की आवश्यकता की कीमत लगती है। संयुक्तता का स्वाद घर से बाहर मालूम होता है। घर जब एक सदा ही दूसरे के सामने उपस्थित रहता है, और जब उन्हें परस्पर के अभाव को अनुभव करने का तनिक भी अवकाश नहीं होता, तब एक की दूसरे में दिलचस्पी स्वभावत: फीकी-सी पड़ती जाती है। अब खुली दुनिया में आकर वह पग-पग पर दो के एक ही रहने की महत्ता का अनुभव करते हैं।

(ख) उसका पोषण भी धात्री के स्तन से हुआ था। क्या यह उसी कर्म का फल है ? बौद्ध श्रमण कहते हैं- मनुष्य अपने कर्म से ही दुख पाता है परन्तु मेरे बच्चे का क्या कर्म है ? अभी तो उत्पन्न ही हुआ है। उत्पन्न होने से पूर्व ही उसका कर्मफल फूट गया ? वह भी नहीं जानता कि किस कर्म का दण्ड वह भोग रहा है। यह भी नहीं जानता कि वह दण्ड भोग रहा है। हे देवता, अपना अपराध या दुष्कर्म जाने बिना यह अबोध बालक दुष्कर्म से बचने का निश्चय कैसे करे ? यदि दुष्कर्म मैंने किया है तो दण्ड और भोग के लिये प्रस्तुत हूँ।

अथवा

पहले वह कुछ भी जानता-समझता नहीं था। जानने-समझने की कोई इच्छा भी नहीं थी। पर अब जानने लगा है। और जितना जानता है, उससे बहुत ज्यादा जानने की इच्छा है, बल्कि सब कुछ जान लेने की इच्छा है। उसे मालूम है कि चाचा पापा के पास से आते हैं, और आने पर पापा की बातें करते हैं। क्या बातें करते रहे हैं, उसे नहीं मालूम।

2. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7.5×2=15)

(क) "दिव्या" उपन्यास की भाषा।

(ख) शकुन का चरित्र-चित्रण।

(ग) सुखदा के चरित्र की विशेषताएँ।

(घ) "सुनीता" का उद्देश्य।

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास की कथा-वस्तु की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'कर्मभूमि' उपन्यास स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि है।' इस कथन की विवेचना कीजिए।

4. 'आपका बंटी' उपन्यास-कला की दृष्टि से एक सफल रचना है। स्पष्ट कीजिए। (15)